बीएएनसी 105
प्रयोगिक नियमावली (मैनुअल)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

बीएएनसी 105 प्रयोगिक नियमावली (मैनुअल)*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 जनजाति और अन्य समुदाय

1.2 क्षेत्रकार्य क्या है?

1.3 अनुसंधान प्रस्ताव/रुपरेखा की तैयारी

1.4 क्षेत्रकार्य की तैयारी, अनुसंधान की विधियाँ, उपकरण और तकनीक

1.5 आंकड़ा विश्लेषण, व्याख्या और रिपोर्ट लेखन

1.6 उद्धृत संदर्भ की प्रस्तुति

1.7 सारांश

1.8 संदर्भ

अधिगम के उद्देश्य

इस नियमावली को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञानी अनुसंधान का संचालन कैसे करते हैं;
- फील्ड वर्क में क्या शामिल है; तथा
- एक अनुसंधान परियोजना में शामिल विभिन्न चरण।

1.0 परिचय

मानव विज्ञान, मानव के जीवविज्ञान और संस्कृति का एक वैज्ञानिक अध्ययन है और इसे लोकप्रिय रूप से "क्षेत्र विज्ञान" के रूप में जाना जाता है। मानवविज्ञानी सक्रिय रूप से उन समुदायों के दैनिक जीवन में भाग लेते हैं जिनका वे अध्ययन करते हैं; क्योंकि वे इसके सांस्कृतिक–सामाजिक अर्थ की वास्तविकताओं का पता लगाते हैं। वे वास्तविकता का पता दमन और सिद्धांतों से नहीं बल्कि लोगों से प्रयत्क्ष मिलकर उनके अवलोकन से करते हैं। यह अध्ययन के दृष्टिकोण के रूप में मानवविज्ञान के फील्ड वर्क में आता है। क्षेत्रीयकार्य (फील्ड वर्क) मानव विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है।

यह प्रयोगिक (व्यावहारिक) नियमावली इस बारे में है कि मानवविज्ञानी, लोगों के साझे और सीखे हुए व्यवहारों और विश्वासों के बारे में जानने के लिए अनुसंधान कैसे करते हैं।

पहला खंड मानवविज्ञान में फील्डवर्क की अनुसंधान विधियों पर चर्चा करता है जिनका अनुसंधान करते समय उपयोग किया जाता है। दूसरा खंड एक अनुसंधान परियोजना में उपयोगी चरणों को शामिल करता है।

* डॉ. के. अनिल कुमार मानवविज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली एवंप्रो. पी वेंकट राव,पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, मानवविज्ञान विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय.द्वारा संपादित

1.1 जनजाति और अन्य समुदाय

भारत सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता के मामले में एक अनूठा देश है। डॉ. के. सुरेश सिंह ने भारत के नागरिक परियोजना में 4,635 समुदायों की पहचान की। इस परियोजना में शामिल समुदाय निम्नलिखित हैं :

- हिंदू (3,539),
- मुस्लिम (584),
- ईसाई (339),
- सिख (130),
- बौद्ध (93),
- जैन (100),
- पारसी (9), और
- यहूदी (7)।

भारत में अनुसूचित जाति समुदायों की कुल संख्या 751 है और कुछ उत्तर–पूर्वी राज्यों को छोड़कर पुरे भारत में इनकी उपस्थिति थी। अन्य पिछड़ा वर्ग, 1,536 समुदायों की संख्या वाले लोगों का एक बहुत बड़ा समुदाय है (पी.सी.जोशी, 2015) ।

पंजाब, हरियाणा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों चंडीगढ़, दिल्ली तथा पुडुचेरी को छोड़कर भारत के सभी हिस्सों में जनजातियाँ पाई जाती हैं (इकाई 1 देखें)। भारत की जनगणना 2011 में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 705 मानी गई है। अनुसूचित जनजातियाँ जैविक, सांस्कृतिक और भाषाई विशेषताओं में अधिक विविधता दिखाती हैं। वे जहां भी रहे हैं, वहाँ उन्होंने जीवन जीने के स्थानीय तरीकों के लिए खुद को अनुकूलित किया है, और इस प्रकार एक ही समुदाय के भीतर काफी सांस्कृतिक अंतर दिखाई देता है (वी. के. श्रीवास्तव, 2015)।

भारत, किसान समाजों की भूमि है (इकाई 7 देखें)। एक किसान समाज ग्रामीण लोगों से बनता है जो कृषि उत्पादन में सबसे अधिक समय से लगे है, जिनकी उत्पादक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट विशेषताएं शक्तिशाली बाहरी लोगों द्वारा प्रभावित होती हैं, जो आकार, या एक महत्वपूर्ण सीमा तक निर्धारित होती हैं। इसलिए किसानों का अध्ययन गांवों का अध्ययन बन गया। तब वाक्यांश "किसान समुदाय" सामने आया (कृष्णन–कुट्टी, जी:1986)। रॉबर्ट रेडफ़ील्ड (1941) के अनुसार किसान समुदाय एक प्रकार का लोक समाज है जो एक 'लोक–शहरी सातत्य' पर मौजूद है, जिसमें भौगोलिक और ऐतिहासिक दोनों आयाम हैं। किसान वर्ग के भीतर बड़ी संख्या में छोटे, बड़े, धनि, मध्यम, सीमांत इत्यादि किसान शामिल हैं। मानवविज्ञानी सावधानीपूर्वक भारत के विभिन्न समुदायों के बारे में नृवंशविज्ञान(एथेनोग्राफिक) संबंधी जानकारी एकत्र करते हैं।

गतिविधि

किसान समाज को परिभाषित करें।

1.2 क्षेत्रीय कार्य (फील्ड वर्क) क्या है?

फील्ड वर्क सामाजिक -सांस्कृतिक मानवविज्ञान से लेकर चिकित्सा या जैविक मानवविज्ञान तक मानवविज्ञान के सभी क्षेत्रों के अनुसंधान में शामिल है। फील्ड वर्क को विभिन्न परिस्थिति में किया जा सकता है जैसेः

- एक शहरी या आभासी(वर्चुअल) वातावरण,
- एक छोटे आदिवासी समुदाय,
- एक संग्रहालय, पुस्तकालय, सांस्कृतिक संस्थान, व्यवसाय, या
- एक संरक्षित संरक्षण क्षेत्र में।

(https://www.discoveranthropology.org.uk/about-anthropology/fieldwork.html)

फील्ड वर्क मानवविज्ञान की पहचान है। इसे अध्ययन की नींव कहा जा सकता है। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी मार्गरेट मीड ने लिखा कि "हमारे पास अभी भी मानवविज्ञानी बनाने के लिए कोई रास्ता नहीं है सिवाय इसके कि उसे क्षेत्र में भेजा जायेः जीवित सामग्री के साथ यह संपर्क हमारी विशिष्ट विशेषता है" (मीड, मार्गरेटः 1964:5) ।

मानवविज्ञानी अपने शोध प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आकंड़ें एकत्र करते हैं। समुदाय में लोगों के एक समूह के साथ दैनिक आधार पर बातचीत करते हुए मानवविज्ञानी अपनी टिप्पणियों और धारणाओं का दस्तावेजीकरण करते हैं और आवश्यकतानुसार अपने शोध के केंद्र–बिंदु को समायोजित करते हैं। वे आम तौर पर कुछ महीनों से लेकर कुछ वर्षों तक उन लोगों के बीच रहते हैं जिनके बारें में वे अध्ययन कर रहे हैं। जब मानवविज्ञानी फील्ड वर्क का संचालन करते हैं तो वे तथ्यों को एकत्रित करते हैं।

मानववैज्ञानिकों द्वारा आँकड़े इकट्ठा करने के लिए नृवंशविज्ञान (एथेनोग्राफी) एक महत्वपूर्ण उपकरण है जिसमें लोगों की रोजमर्रा की प्रथाओं और जीवन का गहन अध्ययन करना होता है। नृवंशविज्ञान एक विशेष समय और स्थान पर अध्ययन समूह का एक विस्तृत विवरण तैयार करता है जिसे "मोटे विवरण" (थिक डिस्क्रिप्शन) के रूप में भी जाना जाता है इस शब्द को मानवविज्ञानी क्लिफर्ड गीट्र्ज़ ने अपनी पुस्तक *द इंटरप्रेटेशन ऑफ़ कल्चरस* में शोध और लेखन के लिए इस्तेमाल किया था। एक थिक डिस्क्रिप्शन न केवल प्रश्न में व्यवहार या सांस्कृतिक घटना को बताता है बल्कि, उस संदर्भ को भी बताता है जिसमें यह होता है और इसके बारे में भी जिसमें मानवशास्त्रीय व्याख्याएं होती हैं। इस तरह के विवरण पाठकों के आंतरिक तर्क को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं कि संस्कृति में लोग जैसा करते हैं ,वे वैसा क्यों करते हैं और वह व्यवहार उनके लिए सार्थक क्यों है। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि सांस्कृतिक अंतर्द्वंद्वों के दृष्टिकोण, परिप्रेक्ष्य और प्रेरणाओं को समझना मानव विज्ञान के केंद्र में है।

(केटी नेल्सनhttps://courses.lumenlearning.com/suny-culturalanthropology/chapter/fieldwork)।

गतिविधि
नृवंशविज्ञान(एथेनोग्राफी) क्या है?

1.3 अनुसंधान प्रस्ताव/रुपरेखा की तैयारी

अनुसंधान के संचालन के लिए एक समग्र रणनीति है। सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान में फील्ड वर्क का संचालन रोमांचक, निराशाजनक, डरावना, उबाऊ और कभी–कभी खतरनाक हो सकता है। लेकिन एक बात सच हैः फील्ड वर्क इसमें शामिल सभी लोगों के जीवन को बदल देता है। क्षेत्र में जाने से पहले, भावी शोधकर्ता को एक शोध विषय का चयन करना चाहिए और फील्ड वर्क के लिए विस्तृत शोध प्रस्ताव या रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। यह अनुभाग फील्ड वर्क की प्रक्रिया के शुरुआती चरणों की पड़ताल करता है। आपके शोध परियोजना के सफल होने के लिए ये कदम महत्वपूर्ण हैं।

विषय का चयन

एक शोध परियोजना के लिए एक विषय का चयन करना शोधकर्ता का पहला कदम है। विषय का चयन करते समय सुनिश्चित करें कि यह महत्वपूर्ण और संभव है। किसी विषय का चयन करने के लिए आपको पहले उस विषय में पहले से उपलब्ध साहित्य जो उस विषय में दूसरों द्वारा लिखा गया है उसकी समीक्षा करनी होगी। उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक मानवविज्ञानियों ने 1970 के दशक के दौरान महसूस किया कि मानवशास्त्रीय अनुसंधान ने आज तक महिलाओं और लड़कियों को नजरअंदाज कर दिया था और इस तरह से नारीवादी मानवविज्ञान की शुरुआत हुई (बारबरा डी. मिलर 2012)। विषय का चुनाव अधिमानतः एक विषय या शोध के विषय से जुड़ी समस्या पर आधारित होना चाहिए। विषय के चयन के लिए विभिन्न स्रोत हैं लेकिन सबसे सामान्य तरीके जिनसे उस विषय में रूचि पैदा होती है वे निम्नलिखित हैः

- व्यक्तिगत अनुभव,
- किसी ने कुछ कहा है,
- कुछ आपने पढ़ा है,
- कुछ आपने अध्ययन किया है,
- कुछ ऐसा है जिसका आपने अध्ययन नहीं किया है,
- आपके पेशे की आकांक्षाएँ।

महत्वपूर्ण घटनाएं और रुझान अक्सर एक शोध विषय को प्रेरित करते हैं।

विषय चुनने के बाद आपको अपने पर्यवेक्षक के साथ इस पर चर्चा करनी चाहिए। पर्यवेक्षक आपके विषय से संबंधित जांच के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को समझने में आपकी मदद कर सकता है। एक विषय का चयन करने और साहित्य की समीक्षा करने के बाद आपको निम्नलिखित संरचना में अनुसंधान प्रस्ताव का एक मसौदा तैयार करना होगाः

आप अपने पर्यवेक्षक के साथ मसौदा प्रस्ताव पर चर्चा कर सकते हैं। अनुसंधान प्रस्ताव में निम्नलिखित संरचना शामिल होनी चाहिएः

- परिचय या पृष्ठभूमि

- अनुसंधान समस्या का कथन / परिकल्पना / अनुसंधान प्रश्न / अनुसंधान की रूपरेखा
- साहित्य की समीक्षा
- अध्ययन के उद्देश्य
- पद्धति
- अध्ययन का महत्व
- संभावित अध्याय
- ग्रंथ सूची या संदर्भ

परिचय या पृष्ठभूमि

शोध प्रस्ताव का एक परिचयात्मक विवरण स्पष्ट करता है कि आप अध्ययन में क्या रुचि रखते हैं। यह विषय से शुरू होता है और कई उप–वर्गों का अनुसरण करता है। आपके परिचय में क्षेत्रों की पृष्ठभूमि की जानकारी शामिल होनी चाहिए जैसेः

- वह संदर्भ जिसमें आपका शोध आयोजित किया जाएगा
- विषय चुनने के अपने कारण
- अन्य संबंधित अनुसंधान (या इसकी कमी)
- शोध का दायराः आपने जो कुछ हासिल किया है उसे पूरा करना है। परिचय में निहित जानकारी आपके सार की जानकारी से बहुत अधिक विस्तृत होनी चाहिए।

अनुसंधान समस्या का कथन / परिकल्पना / अनुसंधान प्रश्न / अनुसंधान की रूपरेखा

संक्षेप में समस्या के बयान में उसका विश्लेषण और प्रासंगिकता भी होनी चाहिए। यह अध्ययन करने के तर्क है। मौजूदा साहित्य की समीक्षा करें और अंतराल की पहचान करें। समस्या के कथन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिएः

- परिकल्पना बताएं:परिकल्पना आपके द्वारा की गई समस्या का संभावित उत्तर है और यह शोध परिकल्पना का परीक्षण करता है। लेकिन सभी अध्ययनों में परिकल्पना का परीक्षण शामिल नहीं होता है।
- आप अनुसंधान और आंकड़ा संग्रह की रूपरेखा में मौजूदा साहित्य, प्रतिमान (मॉडल) और सिद्धांतों का उपयोग कैसे करेंगे?
- प्रासंगिक सफलता कारकों की पहचान करने के लिए आपको कई प्रश्नों को संबोधित करना होगा। इन सवालों के जवाब आपको निष्कर्ष निकालने में सक्षम बनाएंगे।
- इस कार्य को करने के लिए आप जिन रणनीतिक दृष्टिकोणों को अपनाते हैं, उन्हें शामिल करें।
- संदर्भ ठीक से सूचीबद्ध होना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

शोध विषय को परिभाषित करने के बाद अपने शोध प्रस्ताव के लिए साहित्य की गहन समीक्षा करना महत्वपूर्ण है। अनुसंधान कार्य आम तौर पर एक विशिष्ट शोध समस्या

पर पहले के कार्यों की समीक्षा करके शोध अंतराल की पहचान कर आगे बढ़ता है। शोधकर्ता को उस प्रश्न पर पिछले कार्यों की समीक्षा करने की आवश्यकता होगी जो वह उठा रहा है (डोले, 1995)। साहित्य की समीक्षा के लिए पारंपरिक स्रोत पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र रहे हैं जहां पुस्तकें और विभिन्न संदर्भ, क्रम सूची पत्र तरीके से पाए जाते हैं। आजकल अधिकांश पुस्तकालय एक कम्प्यूटरीकृत नत्थीकरण (फाइलिंग) व्यवस्था बनाए रखते हैं जिसके द्वारा इलेक्ट्रॉनिक (ऑनलाइन) माध्यम से संदर्भ उपलब्ध कराया जाता है। पुस्तकालय स्रोतों के कम्प्यूटरीकरण के साथ साहित्य की खोज बहुत आसान हो गई है; अगर इंटरनेट कनेक्शन उपलब्ध है तो कोई भी आसानी से उन तक पहुंच सकता है (रोसनॉव और रोसेंथल, 1996)। साहित्य की समीक्षा समस्या का अस्थायी समाधान प्रदान करती है। यह उस सिद्धांत को भी दर्शाता है जिस पर अध्ययन आधारित है।

अध्ययन का उद्देश्य

एक शोध प्रस्ताव के उद्देश्य इस शोध को आगे बढ़ाने के लिए आपकी मंशा को स्पष्ट करते हैं। आमतौर पर किसी विषय में तीन से चार उद्देश्य होते हैं। इन उद्देश्यों को एक श्रंखला के रूप में लिखा जा सकता है जो आपके दृष्टिकोण को इंगित करता है। उदाहरण के लिए मान लें कि आप किसान आत्महत्याओं के बारे में अध्ययन करना चाहते हैं। आप किसानों में आत्महत्या की दर में वृद्धि के कारणों का अध्ययन करना पसंद कर सकते हैं। इस प्रकार उद्देश्य, अध्ययन का दायरा प्रदान करते हैं। उद्देश्यों की संख्या, स्पष्ट और अंतर–संबंधों में प्रबंधनीय होनी चाहिए।

अनुसंधान क्रियाविधि

अनुसंधान पद्धति प्रस्ताव का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसे एक शोध प्रस्ताव की रीढ़ माना जाता है। अनुसंधान पद्धति, पांच उप–घटकों में विभाजित है:

1) अध्ययन की रूपरेखा,
2) आंकड़ें का स्रोत और प्रकृति,
3) जनसंख्या और निदर्शन(सैंपल),
4) आंकड़ा संग्रह के उपकरण और तकनीक, तथा
5) विश्लेषण की विधि।

कार्यप्रणाली (प्रविधि)समस्या से निपटने के लिए एक योजना और दृष्टिकोण है। इससे एक स्पष्ट तस्वीर मिलती है कि अनुसंधान कैसे शुरू होगा और यह कैसे समाप्त होगा। इस प्रकार अनुसंधान पद्धति अनुसंधान परिणामों की गुणवत्ता निर्धारित करती है।

अध्ययन का महत्व

इस खंड में अध्ययन के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से बताएं और अध्ययन के महत्व को स्पष्ट करें। अध्ययन के क्षेत्र में यह अध्ययन ज्ञान के सैद्धांतिक भाग को कैसे जोड़ता है, इस पर चर्चा करके महत्व को संबोधित किया जा सकता है। शिक्षार्थियों को यह भी बताना चाहिए कि उनका शोध उनके ज्ञान के लिए एक मूल योगदान कैसे प्रदान करता है। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि यह खंड अच्छी तरह से विकसित हो।

स्पष्ट रूप से परिभाषित उद्देश्य और मजबूत सैद्धांतिक आधार के बिना थीसिस या शोध प्रबंध मौलिक रूप से शुरू से ही त्रुटिपूर्ण है।

संभावित अध्याय

सभी अस्थायी अध्याय नाम और उनके बारे में कुछ विवरण शामिल करें। यह अभ्यास आपको अपने शोध प्रबंध को सुचारू रूप से और व्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद करेगा।

ग्रंथ सूची या संदर्भ

मुख्य अध्ययन में उद्धत सभी कार्यों को सम्मिलित करने वाली एक पूरी ग्रंथ सूची शामिल करें।

गतिविधि

एक शोध संग्रह के संरचना का वर्णन करें।

1.4 क्षेत्रकार्य की तैयारी, अनुसंधान की विधियाँ, उपकरण और तकनीक

एक बार शोध की रूपरेखा तैयार होने के बाद अगला चरण फील्ड वर्क की योजना की तैयारी है। फील्ड वर्क परियोजना स्थापित करने का पहला चरण अनुसंधान के लिए स्थान या स्थानों पर निर्णय लेना है। दूसरा, रहने के लिए जगह ढूंढना है। आपको उचित स्वास्थ्य सावधानियां बरतनी चाहिए। घर छोड़ने से पहले आपको सभी प्रासंगिक टीकाकरण प्राप्त करना चाहिए। एक दूरस्थ क्षेत्र में अनुसंधान के लिए एक अच्छी तरह से संगृहीत की गई चिकित्सा सम्बन्धी और बुनियादी प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण आवश्यक हैं।

क्षेत्र की स्थिति के आधार पर क्षेत्र की तैयारी में विशेष उपकरण खरीदना शामिल हो सकता है। जैसे कि एक तम्बू, गर्म कपड़े, जलरोधक कपड़े और मज़बूत जूते। अनुसंधान उपकरण और आपूर्ति तैयारी का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। उदाहरण के लिए, कैमरा, वीडियो रिकॉर्डर, टेप रिकार्डर, और लैपटॉप कंप्यूटर अब बुनियादी क्षेत्र के उपकरण हैं जिन्हें आपको क्षेत्र में आंकड़ों को एकत्रित करने लिए ले जाना चाहिए।

सभी छात्रों को एक क्षेत्र दैनिकी (फील्ड डायरी) को बनाए रखने और एक अलग लेखपुस्तिका में निर्दिष्ट विषय से संबंधित आंकड़ों में लिखने की आवश्यकता होती है। क्षेत्र दैनिकी में दिन की गतिविधियाँ (समय और आंकड़ों का संग्रह के स्थान के विवरण के साथ) शामिल हैं:

- उत्तरदाताओं से मिलना
- आंकड़ें एकत्र करना
- जानकारी प्राप्त (प्रमुख सूचना देने वालों की पहचान) करना
- आँकणों का सत्यापन
- समस्याओं का सामना करना

- दिलचस्प टिप्पणियां,
- व्यक्तिगत भावनाएँ।

आम तौर पर मानवविज्ञान के छात्र क्षेत्रकार्य पर जाते समय निम्नलिखित अपने साथ ले जाते हैः

- शोध प्रस्ताव
- एकत्र की जाने वाली वस्तुओं की सूची
- प्रश्नावली, साक्षात्कार गाइड आदि की पर्याप्त संख्या
- क्षेत्र दैनिकी लिखने के लिए लेखन पुस्तिका
- कैमरे के साथ सहायक उपकरण
- ध्वनि रिकॉर्डिंग यंत्र
- जैविक अनुसंधान में उपयुक्त उपकरण
- जनगणना विवरण और क्षेत्र के नक्शे का अध्ययन
- पहचान पत्र
- परिचय पत्र

स्थान का चयन

एक शोध स्थल वह जगह होती है जहाँ शोध होता है और कभी–कभी एक शोध में एक से अधिक स्थान शामिल होते हैं। शोध स्थल अध्ययन के लिए चयनित समस्या पर निर्भर करता है। चुनी गई समस्या एक आदिवासी समुदाय, एक किसान समुदाय, एक ग्रामीण समाज या एक आधुनिक समाज के एक विशेष पहलू से संबंधित हो सकता है। इसलिए, स्थान संबंधित समाज के निवास स्थान में स्थित होना चाहिए। नृवंशविज्ञानियों ने कई सामाजिक व्यवस्था का भी अध्ययन किया है जैसे कि संगठन, संस्थाएं, बैठकें और किसी भी व्यवस्था के बारे में जिसमें मनुष्य बातचीत कर रहे हैं। निम्नलिखित कुछ अलग–अलग व्यवस्थाएं हैं जिनका अध्ययन नृवंशविज्ञानियों द्वारा किया गया हैः

- आदिवासियों के पवित्र स्थान
- आदिवासी साप्ताहिक बाजार,
- भोजन एकत्र करने की गतिविधियाँ,
- धार्मिक त्योहार,
- किसान आत्महत्या,
- सामाजिक आंदोलन,
- सैर गाह खरीद–दारी (शॉपिंग मॉल),
- जेल /कारागार,
- पारिवारिक व्यवस्था,
- उद्योग या कार्य व्यवस्था,
- बूचड़खाने

- अस्पताल, नगर भवन (सिटी हॉल) और एजेंसियां (संस्थाएं)।

विभिन्न प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का एथनोग्राफिक अध्ययन मानव अंतःक्रियात्मक विशेषताओं पर आधारित है। क्षेत्र में एक शोधकर्ता को संस्कृति के आघात का अनुभव हो सकता है।जब एक व्यक्ति एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में प्रवेश करता है तब सांस्कृतिक झटके बेचैनी, अकेलापन और चिंता की भावना उत्पन्न होती है। दो संस्कृतियां जितनी अलग होंगी, उतने ही गंभीर झटकों की संभावना होगी। संस्कृति के झटके कई सांस्कृतिक मानवविज्ञानियों के लिए होते हैं चाहे उन्होंने खुद को फील्ड वर्क के लिए खुद को कितना भी तैयार किया हो क्षेत्र में संस्कृतिक झटके की समस्याओं से लेकर भाषा की बाधा और अकेलापन तक हो सकता है। कई मानवविज्ञानी फील्ड वर्क के समायोजन में भोजन के अंतर को एक बड़ी समस्या मानते थे।

घनिष्ठता स्थापित करना(रैपो बिल्डिंग)

एक शोधकर्ता स्थान का चयन करने के बाद अपना फील्ड वर्क शुरू करता है। फील्ड वर्क के शुरुआती चरणों में शोधकर्ता का प्राथमिक लक्ष्य अध्ययन गांव में प्रमुख नेताओं या निर्णय निर्माताओं के साथ तालमेल स्थापित करना है, जो द्वारपाल (समूह या समुदाय तक औपचारिक रूप से या अनौपचारिक रूप से पहुंच को नियंत्रित करने वाले लोग) के रूप में सेवा कर सकते हैं। अध्ययन आबादी का विश्वास प्राप्त करना इस बात पर निर्भर करता है कि शोधकर्ता खुद को कैसे प्रस्तुत करता है। कई संस्कृतियों में लोगों को यह समझने में कठिनाई होती है कि कोई व्यक्ति उनका अध्ययन करने के लिए क्यों आएगा क्योंकि वे विश्वविद्यालयों और अनुसंधान और मानवविज्ञान के बारे में नहीं जानते हैं। इसके अलावा उन्हें मानवविज्ञानी द्वारा पूछे जाने वाले सभी प्रकार के प्रश्नों के उद्देश्य को समझना मुश्किल है। बाहरी लोगों के साथ पिछले अनुभव के आधार पर उनकी अपनी व्याख्याएं हो सकती हैं, जिनके लक्ष्य सांस्कृतिक मानवविज्ञानी जैसे कि कर संग्राहक, व्यवसायी, परिवार नियोजन प्रवर्तक और कानून–प्रवर्तन अधिकारियों से भिन्न थे। चूंकि, मानवविज्ञानी के पास कोई अधिकार या आधिकारिक पद नहीं होता है इसलिए उनके लिए लोगों के साथ तालमेल स्थापित करना और उन्हें विनम्र शिक्षार्थियों के रूप में संपर्क करना बहुत महत्वपूर्ण है (बारबरा डी मिलरः 2012)।

आंकड़ा संग्रह के तरीके, उपकरण और तकनीक

एक बार जब शोधकर्ता क्षेत्र में तालमेल बनाता है तो अगला चरण प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह करना होता है। यह फील्ड वर्क का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह पूरे परियोजना कार्य या शोध प्रबंध का आधार है। क्षेत्र में शोधकर्ता मानवविज्ञान विधियों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके आंकड़ें एकत्र कर सकता है (ब्लॉक 4 कोर्स BANC102 देखें)।

शोधकर्ता का लक्ष्य अनुसंधान विषय के बारे में जानकारी या आँकड़े एकत्रित करना है। सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान में ऐसी विविधताएं मौजूद हैं कि किस प्रकार के आंकड़ों पर जोर दिया जाए और आंकड़ें एकत्र करने के सर्वोत्तम तरीके कौन से हों।

- एक समर्पित (निगमनात्मक दृष्टिकोण (डिडक्टिव)अनुसंधान का एक रूप है जो अनुसंधान प्रश्न या परिकल्पना के साथ शुरू होता है और फिर अवलोकन,

साक्षात्कार और अन्य तरीकों के माध्यम से प्रासंगिक आंकड़ें एकत्रित करना शामिल है।

- एक प्रेरक (आगमनात्मक) दृष्टिकोण (इनडक्टिव)अनुसंधान का एक रूप है जो एक परिकल्पना के बिना आगे बढ़ता है और इसमें असंरचित, अनौपचारिक अवलोकन, बातचीत और अन्य तरीकों के माध्यम से आंकड़ें एकत्र करना शामिल है।

आंकड़ें दो प्रकार के हो सकते हैं:

- मात्रात्मक आंकड़ें या संख्यात्मक जानकारी जैसे कि, आबादी के संबंध में भूमि की सीमा या विशेष स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों की संख्या। निगमन प्रणाली द्वारा मात्रात्मक आंकड़ों को ज़्यादा एकत्रित किया जा सकता है ।
- गुणात्मक आंकड़ें या गैर–सांख्यिक जानकारी जैसे कि, मिथकों की रिकॉर्डिंग, वार्तालाप और घटनाओं का फिल्मांकन। भारतीय विधियाँ गुणात्मक आंकड़ें एकत्र करने की अधिक संभावना रखती हैं।

अधिकांश मानवविज्ञानी अलग–अलग श्रेणी के लिए घटानाएं और आगमनात्मक दृष्टिकोण और मात्रात्मक और गुणात्मक आंकड़ों को जोड़ते हैं। मानवविज्ञानी के पास प्रत्येक दृष्टिकोण में एकत्रित आँकड़ें के लिए अलग–अलग स्तर हैं।

- व्यवहार परक दृष्टिकोण (एटिक)शोधकर्ता की योग्यताओं और श्रेणियों के अनुसार एकत्र किए गए आँकड़ों को संदर्भित करता है, जिसका लक्ष्य एक अनुमान को टटोलने में सक्षम होना है।
- व्यवस्था परक दृष्टिकोण(एमिक) आंकड़ें एकत्रण को संदर्भित करता है जो दर्शाता है कि अंदरूनी सूत्र उनके अपमान के बारे में क्या कहते हैं, समझते हैं और अंदरूनी सूत्रों की सोच की श्रेणी क्या है।

सांस्कृतिक भौतिकवादी व्यवहार परक (एटिक) आंकड़ें एकत्र करने की अधिक संभावना रखते हैं जबकि व्याख्या करने वाले व्यवस्था परक (एमिक) आँकड़ें एकत्रित करने की अधिक संभावना रखते हैं।

हालांकि, फिर भी अधिकांश सांस्कृतिक मानवविज्ञानी दोनों प्रकार के आंकड़ें एकत्रित करते हैं (बारबरा डी मिलरः 2012)।

मानवविज्ञान में कई प्रकार की फील्ड वर्क विधियां, उपकरण और तकनीके हैं जो अनुसंधान का संचालन करते समय उपयोग की जाती हैं। नीचे हम कुछ फील्ड वर्क विधियों का उपयोग करने के बारे में चर्चा कर रहे हैं। लोग वास्तव में मौखिक आंकड़ें के साथ अवलोकन का संयोजन करते हैं और सोचते हैं कि वह एक संस्कृति के संपूर्ण दृश्य के लिए आवश्यक है (संजेकः 2000)।

लोग कह सकते हैं कि वे कुछ पर विश्वास करते हैं, लेकिन उनका व्यवहार उनके कहे अनुसार अलग हो सकता है। सभी अवलोकन वैज्ञानिक नहीं हैं।जब कोई अवलोकन व्यवस्थित और निष्पादित हो जाता है तो वह वैज्ञानिक अवलोकन हो जाता है। यह एक वास्तविक जीवन की स्थापना या एक प्रयोगशाला में हो सकता है। एक नृवंशविज्ञानी के रूप में एक मानवविज्ञानी वास्तविक जीवन व्यवस्था में व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार को देखता है।

क्षेत्र में आंकड़ें एकत्रित करने के लिए, शोधकर्ता अनुसूची और प्रश्नावली का उपयोग करते हैं।

- एक अनुसूची किसी दिए गए विषय पर प्रश्नों का एक संरचित समूह है जो साक्षात्कारकर्ता या अन्वेषक द्वारा व्यक्तिगत रूप से पूछा जाता है। प्रश्नों का क्रम, प्रश्नों की भाषा और अनुसूची के कुछ हिस्सों की व्यवस्था नहीं बदली जाती है। हालाँकि अन्वेषक प्रश्नों की व्याख्या कर सकता है यदि, उत्तरदाता को किसी कठिनाई का सामना करना पड़े।
- एक प्रश्नावली एक उपकरण को संदर्भित करती है जो प्रश्नों का उत्तर एक ऐसे बनावट का उपयोग करके प्राप्त करता है जो प्रतिवादी स्वयं से भरता है। इसमें कुछ प्रश्न मुद्रित होते हैं या एक निश्चित क्रम में टंकित किए जाते हैं।

प्रतिभागी अवलोकन विधि मानवविज्ञान की पहचान है। इस विधि की खोज ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की ने की थी। इस पद्धति का उपयोग करते हुए शोधकर्ता या नृवंशविज्ञानी न केवल अवलोकन करता है बल्कि संस्कृति की गतिविधियों में भाग लेता है। इस तरह से मानविज्ञानी व्यवस्था परक (व्यवस्था के अंदरूनी व्यक्ति के दृष्टिकोण) जो व्यवहार परक (व्यवहार के अंदरूनी सूत्रों के दृष्टिकोण) के विपरीत को अंकित करने का प्रयास करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि व्यवस्था परक और व्यवहार परक (एमिक और एटिक) परस्पर अनन्य हैं; वे व्यक्तिपरक और उद्देश्य दोनों व्याख्याएं देकर एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

प्रतिभागी–अवलोकन का उपयोग करने के अलावा क्षेत्र में सांस्कृतिक मानवविज्ञानी नृवंशविज्ञान के साक्षात्कार पर बहुत भरोसा करते हैं। यह एक साक्षात्कार प्रश्न या निर्देशित बातचीत के माध्यम से मौखिक आंकड़ें एकत्र करने की एक तकनीक है। इस तकनीक का उपयोग लोग क्या सोचते हैं या महसूस करते हैं (मनोभाव सम्बन्धी आंकड़ें) के साथ–साथ वे क्या करते हैं (व्यवहार से सम्बंधित आंकड़ें) के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक आकस्मिक बातचीत से अधिक उद्देश्यपूर्ण है।

साक्षात्कारकर्ता द्वारा रखे गए नियंत्रण के स्तर के आधार पर, नृवंशविज्ञान साक्षात्कार दो प्रकार के होते हैं:

- *असंरचित साक्षात्कार:* साक्षात्कारकर्ता एक सामान्य विषय पर खुले–आम प्रश्न पूछता है और साक्षात्कारकर्ताओं को अपने स्वयं के शब्दों का उपयोग करके अपनी गति से जवाब देने की अनुमति देता है। साक्षात्कारकर्ता इन साक्षात्कारों में न्यूनतम नियंत्रण रखता है।
- *संरचित साक्षात्कार* (परिमित्तोत्तर प्रश्न): साक्षात्कारकर्ता सभी सूचना देने वालों से एक ही क्रम में, और अधिमानतः एक ही समूह के तहत सवाल पूछता है।

यदि हम साक्षात्कार और स्कूल परीक्षा के बीच एक सादृश्य बना सकते हैं, तो संरचित साक्षात्कार लघु–उत्तर परीक्षणों के लिए तुलनीय होगा जबकि असंरचित साक्षात्कार खुला हुआ निबंध परीक्षणों की तरह होगा।

एक साक्षात्कार में केवल दो लोग साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्कारदाता शामिल हो सकते हैं या कई लोग जिन्हें समूह साक्षात्कार या केंद्रित समूह कहा जाता है। केंद्रित समूह एक विशेष विषय पर चर्चा करने के लिए मानवविज्ञानी द्वारा बुलाए गए छोटे

समूह हैं (छह से दस लोगों से बना हुआ समूह)। यद्यपि जन–समूह के जनमत सर्वेक्षण और वाणिज्यिक उत्पाद विपणन करने के लिए केंद्रित समूह लोकप्रिय हैं लेकिन व्यावहारिक मानवविज्ञानी समय बचाने के लिए दोनों का उपयोग करते हैं और केवल व्यक्तियों का साक्षात्कार करके अंतर्दृष्टि पाना हमेशा संभव नहीं है।

आंकड़ें एकत्र करने के लिए उपयोग की जाने वाली अन्य तकनीकें निम्नलिखित हैं:

- वंशावली विधिः इस विधि के द्वारा एक शोधकर्ता एक समूह के रिश्तेदारी, परिवार और शादी के पद्धिति पर आंकड़ें एकत्र कर सकता है। यह एक बुनियादी तरीका है जिसका उपयोग मानवविज्ञानी सामाजिक संबंधों और इतिहास को समझने में मदद करने के लिए करते हैं।
- केस स्टडी (व्यक्तिक अध्ययन)विधिः इस विधि में किसी केस स्टडी का गहन अध्ययन किया जाता है। मामला एक सामाजिक इकाई है जिसमें एक कुटिल व्यवहार होता है। यह गुणात्मक विश्लेषण की एक विधि है। मानवविज्ञान अनुसंधान में इस पद्धति का उपयोग सामाजिक घटना या सामाजिक इकाई के पूर्ण और विस्तृत खाते को प्राप्त करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति, परिवार, समुदाय, संस्था या एक घटना हो सकती है।
- जीवन इतिहास विधिः इस विधि से एक शोधकर्ता को किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत इतिहास मिलता है। इस तरह मानवविज्ञानी एक संस्कृति में अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। यह शोधकर्ता को व्यवस्था परक परिप्रेक्ष्य को समझने में मदद कर सकता है।

मानवविज्ञान में कई प्रकार के फील्ड वर्क विधियों, उपकरणों और तकनीकों को जानने के लिए, BANC102 पाठ्यक्रम के ब्लॉक 4 देखें।

अनुसंधान का संचालन करते समय मानवविज्ञानी कई नैतिक समस्याओं का सामना करते हैं। क्षेत्र में एक शोधकर्ता को निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए:

- अध्ययन या साक्षात्कार शुरू होने से पहले सूचित सहमति प्राप्त करें।
- सूचना देने वालों के अधिकारों, हितों और संवेदनशीलता की सुरक्षा करना।
- सूचनादेने वालों को साक्षात्कार के उद्देश्य बताऐं।
- सूचना देने वालों को गुमनाम रहने और "अनाधिकारिक" बोलने का अधिकार होना चाहिए।
- व्यक्तिगत लाभ के लिए सूचनादेने वालों का शोषण नहीं होना चाहिए।
- किसी भी संवेदनशील मुद्दे का अन्वेषण न करें।
- प्राप्त आंकड़ों की गोपनीयता सुनिश्चित करें।
- आंकड़ों संग्रह प्रक्रिया के दौरान यह सुनिश्चित करने के लिए सूचना देने वालों की संस्कृति के बारे में पर्याप्त जानें ।

गतिविधि

नृवंशविज्ञान साक्षात्कार के प्रकारों को परिभाषित करें।

1.5 आंकड़ा विश्लेषण, व्याख्या और रिपोर्ट लेखन

आंकड़ा संग्रह समाप्त होने के बाद आंकड़ा विश्लेषण और व्याख्या की प्रक्रिया शुरू होती है। कुछ समय यह सोचने में व्यतीत करें कि आप अपने शोध के बारे में सबसे अधिक उत्साहित हैं और पाठकों तक इसे कैसे पहुंचा सकते हैं। अपने विचारों को एक रूपरेखा में व्यवस्थित करने का प्रयास करें। अपने आप को एक मोटा मसौदा लिखने के लिए समय दें जिसे आप सुधार सकते हैं और/ या फिर से लिख सकते हैं। अधिकांश लिखित शोध प्रबंध एक संतोषजनक अंतिम परिणाम के साथ समाप्त हो सकते है।

पृष्ठभूमि तैयार करें और शोध विषय का परिचय दें। उस क्षेत्र का वर्णन करें जहां आप गए थे और उन लोगों पर कुछ पृष्ठभूमि प्रदान करें जिनके साथ आपने काम किया था। अपने शोध के विषयों और केंद्र का वर्णन करें। अपने तर्क (थीसिस) और मूल लक्ष्यों या शोध प्रश्नों को बताएं और इसमें आपकी रुचि क्यों थी। यह सुनिश्चित करें कि आपका परिचय पाठक को आकर्षित करता है।

नृवंशविज्ञान क्षेत्र अनुसंधान अवलोकन, पारस्परिक क्रिया और पारस्परिक आदान–प्रदान पर निर्भर करता है। अपनी कार्यप्रणाली का वर्णन करें। आँकड़ा एकत्र करने के लिए आपका मुख्य तरीका प्रतिभागी अवलोकन और साक्षात्कार होना चाहिए।

- आपने आँकड़े एकत्र कैसे किये?
- सामग्री का चयन और व्याख्या करने में आपकी मदद करने के तरीकों का चयन आपने कैसे किया?
- आपको किन समस्याओं या चुनौतियों का सामना करना पड़ा?
- उन समस्याओं ने आपके द्वारा अध्ययन की गई घटना, या आपके तरीकों के बारे में कुछ बताया?

आपके द्वारा एकत्रित आँकड़ा के उदाहरण प्रदान करें जो आपके तर्क के लिए प्रासंगिक हैं। सुनिश्चित करें कि आप अपने शोध पत्र से बहस करने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त नृवंशविज्ञानी आँकड़ा एकत्र करते हैं।

क्या आपने जो अध्ययन किया है उसका प्रतिनिधि उदाहरण है या यह असामान्य है?

क्या यह एक पद्धिति है? या यह एक पद्धिति को तोड़ता है?

आप साक्षात्कारकर्ताओं को सीधे तौर पर उद्धृत कर सकते हैं। जहां आपके पास ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने ऐसी ही बातें कही हैं तो उन्हें दोहराएं नहीं। आपको उन्हें एक साथ समूहीकृत करना चाहिए और या तो उनकी समग्र भावनाओं को व्यक्त करना चाहिए या उनमें से एक से एक प्रत्यक्ष उद्धरण का उपयोग करना चाहिए जो बाकी का प्रतिनिधि है। यह वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक दोनों होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, आप रिपोर्ट करना चाहते हैं कि लोग क्या कहते हैं और वे इसे क्यों कहते हैं। यदि आपके पास अन्य प्रकार के आँकड़े, लोगों के व्यक्तिगत इतिहास, आर्थिक स्थिति, आयु आदि हैं तो आपको लगता है कि उन्होंने एक निश्चित राय या विचार व्यक्त करने में योगदान दिया है आप इसका उपयोग कर सकते हैं।

विश्लेषण एक विन्यास के घटक भागों को अलग करने की प्रक्रिया है; एकत्रित आंकड़ों को क्षेत्र टिप्पणी (नोट) से पहचाना जाता है और व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित किया जाता है। कौन सी जानकारी पहले लिखनी चाहिए, कौन सी जानकारी इसके बाद होनी चाहिए और कौन सी जानकारी आखिर में होनी चाहिए, जांचकर्ता द्वारा बताई जाएगी। इस प्रकार व्यवस्थित किया गया आंकड़ा समग्रता में विचार करने पर सार्थक हो जाता है। यह समग्रता ही विन्यास है। प्रत्येक भाग यह विन्यास आमतौर पर शोधकर्ता द्वारा तैयार किए गए लेख या रिपोर्ट में एक अध्याय के रूप में लिखा जा सकता है।

प्रत्येक भाग समस्या के एक विशिष्ट पहलू से संबंधित है। यदि रिपोर्ट के माध्यम से जाने के बाद प्राप्त कुल तस्वीर को एक विन्यास माना जाता है तो हर अध्याय के माध्यम से जाने से जो प्राप्त हुआ है वह विन्यास का एक घटक हिस्सा है। इसे दूसरे तरीके से रखने के लिए शोधकर्ता समग्रता के घटक भागों को अलग करता है और उन्हें सार्थक तरीके से प्रस्तुत करता है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है और इसे सही तरीके से पूरा किया जाना चाहिए।

आँकड़ा विश्लेषण में एकाग्रता बरतनी चाहिए क्योंकि आपको उचित नोट्स बनाने, कोड असाइन करने और कच्चे आँकड़े को एक पत्र(शीट) में स्थानांतरित करने की आवश्यकता होती है जिस पर विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों को लागू किया जा सकता है। व्यक्तिगत नोट्स, साक्षात्कार और केसअध्ययन के माध्यम से प्राप्त जानकारी का उपयोग रिपोर्ट में सहायक साक्ष्य प्रदान करने में भी किया जा सकता है।

एक बार आंकड़ें का विश्लेषण करने के बाद आप परिणामों की व्याख्या करने के चरण पर आगे बढ़ सकते हैं। किसी भी विज्ञान की तरह, मानवविज्ञान का अनुशासन केवल विशिष्ट संस्कृतियों का वर्णन करने से अधिक है। आँकड़ें की व्याख्या करना, शायद सबसे कठिन कदम है जिसमें निष्कर्षों को स्पष्ट करना शामिल है। व्याख्या करने की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से यह बताती है कि परिणाम क्या दर्शाते हैं। यह एक नियमित और यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। बल्कि यह चुने हुए नमूने की सीमाओं और अध्ययन में चयनित और उपयोग किए गए उपकरणों को ध्यान में रखते हुए, विश्लेषण के बाद प्राप्त परिणामों की सावधानीपूर्वक, तार्किक और महत्वपूर्ण परीक्षण का उत्तर है।

हमेशा, व्यक्तिपरकता का एक तत्व होता है जिसे परिणामों की व्याख्या करते समय शोधकर्ता द्वारा कम से कम किया जाना चाहिए। परिणामों की व्याख्या के प्रकाश में, आपको निष्कर्ष और सामान्यीकरण तैयार करने में बहुत सावधानी का उपयोग करना होगा। शोध कार्य में ये अंतिम चरण अध्ययन के निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत करने और शुरुआत में तैयार किए गए उद्देश्यों (यदि कोई हो) के साथ तुलना करने में महत्वपूर्ण और तार्किक सोच की मांग करते हैं। अनुसंधान निष्कर्षों के आधार पर तैयार किए गए सामान्यीकरण को तथ्यों के अनुसार होना चाहिए और प्रकृति के ज्ञात नियमों के साथ टकराव नहीं करना चाहिए।

आपका लेखन स्पष्ट और तार्किक रूप से सुसंगत होना चाहिए।

अपने विषय पर बहुत कुछ पढ़ने के बाद आप सोच सकते हैं कि बहुत सारे विचार, तर्क, मुद्दे और शर्तें स्पष्ट हैं; यह मानना आवश्यक है कि आपके पाठक को विषय के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। इसका मतलब है कि सामान्य ज्ञान से अपने विषय के बारे में कुछ ग्रहण करने के बजाय आपको समझाना चाहिएः

- लोगों द्वारा क्या गतिविधियाँ की जाती हैं,
- कौन लोग हैं, और
- यह सब एक साथ कैसे उपयुक्त बैठता है।

परियोजना की प्रस्तुति तार्किक और संक्षिप्त होनी चाहिए जिससे सामान्य शब्दों और वाक्य संरचना का उपयोग किया जा सके। बोलचाल या गाली–गलौज से बचते हुए भाषा औपचारिक और सीधी होनी चाहिए। व्यक्तिगत सर्वनाम मैं, हम, आप, मेरे, हमारे और हमारे उपयोग नहीं होने चाहिए। शोधकर्ता या अन्वेषक शब्दों का इस्तमाल करने से बचना चाहिए। परियोजना रिपोर्ट के मुख्य पाठ में संक्षिप्तिकरण के उपयोग से बचा जाना चाहिए।

लेखन प्रक्रिया में अक्सर ज्यादातर लोगों की सोच से अधिक समय लगता है। इसलिए अंतिम समय सीमा से पहले पिछले कुछ हफ्तों तक लिखना न छोड़ें; इसके बजाय जल्द से जल्द लिखना शुरू करें। अध्याय एक से लिखना शुरू करना आवश्यक नहीं है। आप एक अध्याय के बीच में भी लिखना शुरू कर सकते हैं। वहां शुरू करें जहां आपके सबूत सबसे मजबूत हों और आपके विचार स्पष्ट हों। आपके शोध प्रबंध के प्रत्येक अध्याय में क्या शामिल होगा इसकी एक रूपरेखा तैयार करें। यह आपको लेखन प्रक्रिया की योजना बनाने और व्यवस्थित करने में सहायता करेगा। यह आपको यह अनुमान लगाने में भी सक्षम करेगा कि प्रत्येक अध्याय को लिखने में कितना समय लगेगा किन क्षेत्रों में अधिक काम करने की आवश्यकता है कौन सी जानकारी कहाँ जाने की आवश्यकता है।

शीर्षक और उपशीर्षक के साथ बड़ी मात्रा में पाठ को विभाजित करें। पाठकों को जितने अधिक दिशासूचक स्तम्भ दिए जायेंगे, उतनी ही आसानी से उनका मार्ग निर्देशन होगा और वे आसानी से समझ पाएंगे।

रिपोर्ट की अध्याय योजना को रेखांकित किया जाना चाहिए और प्रत्येक अध्याय के उद्देश्य को लिखा जाना चाहिए। अध्याय योजना या अध्यायकरण, रिपोर्ट लिखने के लिए एक अस्थायी योजना देगा। यह अभ्यास शोध प्रबंध को सुचारू रूप से और व्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद करेगा। प्रत्येक अध्याय की लंबाई कमोबेश एक जैसी होनी चाहिए। एक परियोजना रिपोर्ट एक शोध कार्य का एक परिणाम है इसलिए इसे प्रस्तुत करते समय फील्ड वर्क की सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए। निम्नलिखित संरचना की सिफारिश की जाती हैः

- शोध प्रबंध का शीर्षक,
- शोध निबंध की तालिका,
- तालिकाओं और तस्वीरों या रेखाचित्र की सूची,
- आभार,
- परिचय,
- साहित्य समीक्षा,
- अध्ययन क्षेत्र और लोग,
- सामग्री और तरीके,

- आँकड़ा विश्लेषण और परिणाम (अध्याय या अनुभाग या पैराग्राफ में प्रस्तुत किया जाना है)
- चर्चा और निष्कर्ष
- संदर्भ

गतिविधि

आँकड़ा(डेटा) व्याख्या क्या है? स्पष्ट कीजिए।

1.6 उद्धृत संदर्भ की प्रस्तुति

आपको उन सभी सूचनाओं के स्रोतों का हवाला देना होगा जो आपके पहले शोध से नहीं हैं। जो भी सामग्री महत्वपूर्ण है और प्रासंगिक है उसे शोध प्रबंध में शामिल किया जाना चाहिए; यह कहने की जरूरत नहीं कि महत्वहीन चीज को नजरअंदाज किया जाना चाहिए। आप पाठ के बॉडी में कैसे उद्धृत करते हैं? महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि उद्धरण को वाक्य में शामिल किया जाना चाहिए। एक वाक्य पर पूर्ण विराम लगाने से पहले इसका हवाला दिया जाना चाहिए। यह कई बार विराम चिह्न के अंदर आने वाली लंबी बोली का हिस्सा हो सकता है। अनुसरण करने के लिए नीचे दिए गए उदाहरण देखें:

- जब पाठ में आप एक लेखक की बात कर रहे हैं

  .. Bindon (1994) discussed….
- जब एक ही लेखक के एक ही वर्ष में एक से अधिक कार्य संदर्भित हों

  .. Bindon (1994a; 1994b)…एक एकल लेखक के लिए – ए, बी, आदि का उपयोग करें।
- जब काम दो लोगों द्वारा किया जाता है

  .. Bindon and Crews (1993) discussed ...

  ... is discussed (Bindon and Crews, 1993).
- जब काम तीन या अधिक लोगों द्वारा किया जाता है, तो एट अल का उपयोग करें।

  .. Bindon et al. (1991) discussed...

  is discussed (Bindon et al., 1991).
- जब इसमें शामिल किए गए उद्धरणों की एक सूची होती है तो उन्हें लेखक के नाम के वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए, फिर दिनांक (वर्ष) तक, अर्द्ध–कॉलन या अल्पविराम द्वारा संदर्भ अलग करना।

  .. is discussed by many workers (Bindon, 1994; Bindon and Crews, 1993; Simons et al 2011)

उन संदर्भों को सूचीबद्ध करें जो वास्तव में परियोजना रिपोर्ट में उद्धृत किए गए हैं और उन लोगों को नहीं जिन्हें आपने परामर्श दिया था लेकिन उद्धृत नहीं किया था। लेखक का नाम हर संदर्भ में शामिल होना चाहिए भले ही एक ही लेखक या लेखकों

द्वारा कई प्रकाशन हों। संदर्भों की सूची लेखकों के नाम के वर्णमाला क्रम में होनी चाहिए और एक ही लेखक या लेखकों द्वारा कई स्रोतों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित किया जाना चाहिए। एक ही लेखक द्वारा एक ही वर्ष में एक से अधिक प्रकाशन को A, B आदि के रूप में निर्दिष्ट किया जाना चाहिए ताकि वे पाठ में सामने आए और उसी क्रम में संदर्भों में सूचीबद्ध हों।

अब 'संदर्भ' के खंड में निम्नलिखित प्रारूप को स्पष्टता और एकरूपता के लिए अनुसरण किया जाना चाहिएः

पत्रिका लेख (Journal Article)

Austin-Broos D. 1991. Aesthetics or Politics: A Choice for Anthropology. Social Analysis 29:116-129.

Bindon JR. 1994.Some implications of the diet of children in American Samoa. Collegium

Anthropologicum, 18:7-15.

Bindon JR, and Crews DE. 1993. Changes in some health status characteristics of American

Samoan men: a 12 year follow up study. American Journal of Human Biology, 5:31-38.

Bindon JR, Crews DE, and Dressler WW. 1991. Lifestyle, modernization, and adaptation among

Samoans. Collegium Anthropologicum, 15:101-110.

(याद रखें कि संदर्भों की सूची में एट अल. की अनुमति नहीं है)

जब एक लेखक का उद्धरण एक पत्रिका और एक पुस्तक दोनों में होता है

Barth F. 1987. *Cosmologies in the making: A Generative Approach to Cultural Variation in*

Inner New Guinea. Cambridge: Cambridge University Press.

1989. The Analysis of Culture in Complex Societies. *Ethnos* 54(3-4):120-142.

Schefold R. 1972-73 Religious Involution: Internal change, and its consequences, in the

taboo system of the Mentawaians. *Tropical Man*. 5:46-81.

1973 Religious Conceptions on Siberut, Mentawai.*Sumatra Research Bulletin* 2:120-24.

1980 The Sacrifices of the Sakuddei (Mentawai Archipelago, Western Indonesia): An attempt

at classification. In R.Schefold, W, Schoorl, & J. Tennekes.eds. *Man, Meaning, and History:*

Essays in Honour of H.G. Schulte Nordholt. The Hague: Martinus Nijhoff.

1982a The Efficacious Symbol. In E.Schwimmer & P.E. de Josselin de Jong.eds. *Symbolic*

Anthropology in the Netherlands. The Hague: Martinus Nijhoff.

संपादित ग्रंथ संदर्भ प्रारूप में अध्याय

Bindon JR. 1997.Coming of age of human adaptation studies in Samoa. In Ulijaszek SJ and

Huss- Ashmore RA, editors. *Human adaptability: past, present, and future*. New York, Oxford

University Press.p 126-156.

Bindon JR, and Zansky SM. 1986. Growth and morphology. In Baker PT, Hanna JM, Baker TS,

editors. *The changing Samoans: behavior and health in transition*. New York: Oxford

University Press.p 222-253.

पुस्तक संदर्भ प्रारूप (बुक रिफ्रेंस)

Bachelard, G. 1969. *The Poetics of Space*.Boston, Beacon Press.

Dressler WW. 1991. *Stress and Adaptation in the Context of Culture: Depression in a Southern*

Black Community. Albany, NY: SUNY Press.

संपादित पुस्तक में

Abu-Lughod, L. 1992.Writing Against Culture.In R. Fox ed. *Recapturing Anthropology*. Santa

Fe: School of American Research.

वेबसाइट

एक वेबसाइट के लिए, पहला तत्व व्यक्तिगत या पंजीकृत नाम होगा (यथासंभव जानकारी दें), अंतिम बार जब इसे नवीनतम बनाया गया, उनके पते के साथ साइट के लिए ज़िम्मेदार समूह (यदि उपलब्ध/लागू), अंतिम साइट को अंतिम बार अनवीनतम किया गया, अभिगमन तिथि और URL पता।

मान लीजिये हम WHO, 1999 के बारें में जानना चाहते है

WHO Country Health Information Profile: Samoa. U.N. W.H.O., Manila,Philippines. (updatedJuly 1, 1999; accessed February 23, 2007). http://www.who.org.ph/chip/ctry.cfm?ctrycode=sma&body=sma.htm&flag=sma.gif&ctry=SAMOA.

1.7 सारांश

मानवविज्ञानी प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र के माध्यम से अपने शोध को पहले हाथ में लेते हैं। मानवविज्ञानी वास्तव में अपने क्षेत्रकार्य (फील्ड वर्क) कैसे करते हैं, इस नियमावली में चर्चा की गई है। किसी भी क्षेत्रकार्य को शुरू करने से पहले कई तरह की तैयारी करनी चाहिए। यद्यपि मानवविज्ञान में प्रत्येक फील्ड वर्क की अपनी विशिष्ट विशेषता है सभी परियोजनाएं एक ही मूल चरणों से गुजरती हैं:

1) एक शोध समस्या का चयन,

2) एक अनुसंधान की रूपरेखा तैयार करना,

3) आँकड़ा एकत्र करना,

4) आँकड़ा का विश्लेषण, और

5) आँकड़ा की व्याख्या करना।

क्योंकि कोई भी दो फील्डवर्क अनुभव समान नहीं होते हैं इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मानवविज्ञानी अपनी फील्डवर्क स्थितियों के लिए उपयुक्त आँकड़े एकत्रित करने की तकनीकों से मेल खाएं। कार्यक्षेत्र के दौरान निम्न विधियों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग किया जाता हैः

- नृवंशविज्ञान विधि,
- प्रतिभागी अवलोकन,
- साक्षात्कार,
- वंशावली, और
- केस अध्ययन।

1.8 संदर्भ

Anil Kumar, K. (2012).*Fieldwork Manual, Fieldwork and Dissertation* (MANP-001), Indira Gandhi National Open University, New Delhi.

Dooley, David. (1995). *Social Science Research Methods.*Third Edition.Englewood Cliff, New

Jersey: Prentice-Hall.

Joshi, P. C. (2015). *People of India*, Symposium on People of India, (edited) by P.C. Joshi, Department of Anthropology, University of Delhi.

Krishnan-Kutty, G. (1986).*Peasantry in India*, 18 Abhinav Publications, New Delhi.

Miller, Barbara D. (2012). *Cultural Anthropology*. Seventh Edition, Pearson.

Mead, Margaret. (1964). *Anthropology: A Human Science*. New York: D. Van Nostrand Co., Inc.

Redfield, Robert (1941). *The Folk Culture of Yucatan*, University of Chicago Press.

Robert L. Welsch and Luis A. Vivanco (2018).*Asking Questions About Cultural Anthropology: A Concise Introduction,* Higher Education Group, Oxford University press, USA.

Rosnow, Ralf L. and Robert Rosenthal. (1996). *Beginning Behavioral Research. A Conceptual Primer.*Englewood Cliffs, New Jersey: Prentice-Hall.

Sanjek, R. (2000). *Keeping Ethnography Alive in an Urbanizing World*, Human Organisation 59(3): 280-88.

Srivastava, V. K. (2015). *Tribes in India*, Symposium on People of India, (edited) by P.C. Joshi, Department of Anthropology, University of Delhi.

Nelson, Katie . Doing Fieldwork: Methods in Cultural Anthropology, https://courses.lumenlearning.com/suny-culturalanthropology/ (accessed on September 09, 2020).

https://www.discoveranthropology.org.uk/about-anthropology/fieldwork.html (accessed on September 09, 2020).

पठन सामग्री

Barnard, Alan. (2007). *Social Anthropology: Investigating Human Social Life.* New Delhi: Viva Books Private Limited.

Carole McGranahan (2020). Writing Anthropology: Essays on Craft& Commitment, Duke University Press.

Clifford, James and George. E. Marcus. (eds) (1990).*Writing Culture: The Poetics and Politics of Ethnography*.Delhi: OxfordUniversity Press.

Engelke, M. (2018).*How to Think Like an Anthropologist*. Princeton, Oxford: PrincetonUniversityPress

Robert M. Emerson Rachel I. Fretz Linda L. Shaw (2011). Writing Ethnographic Fieldnotes, Second edition, The University of Chicago Press.

https://courses.lumenlearning.com/suny-culturalanthropology/chapter/fieldwork/ (access on 10/11/2020).

Vesna V. Godina (2003). Anthropological Fieldwork at the Beginning of the 21st Century. Crisis and Location of Knowledge, Anthropos , 2003, Bd. 98, H. 2. (2003), pp. 473-487

https://www.jstor.org/stable/pdf/40467336.pdf (access on 12/12/2020).

सुझावित अध्ययन

André Béteille. (1986).The concept of tribe with special reference to India, European Journal of Sociology, Vol. 27, No. 2, Vin nouveau, vieillesoutres (1986), pp. 297-318, Cambridge University Press.

Bhowmick, P.K. (1982). "Approaches to Tribal Welfare" in Tribal Development in India: Problems and Prospects, ed. By B. Chaudhuri, Inter-India Publications, New Delhi

Debal K Singharoy. (2004). Peasants' Movements in Post-Colonial India, SAGE Publications.

Desai, A.R. (ed.). 1979. Peasant Struggles in India. Delhi: Oxford University Press.

Dubey, S. M. 1982. „Inter-Ethnic Alliance, Tribal Movements and Integration in North-East India". In Tribal Movements in India. Vol. I. Edited by K.S. Singh. Delhi: Manohar

HariMathur. (2013). Displacement and Resettlement in India: The Human Cost of Development, Routledge, London.

Majumdar, D. N. (1955).The Eastern Anthropologists: Rural Profiles, by The Ethnographic and Folk Culture Society. Lucknow.http://ignca.gov.in/Asi_data/5199.pdf

Reddy, D.N. and Mishra, S. (2009). Agrarian Crisis in India, New Delhi: Oxford.

Robert Redfield. (1956). Peasant Society and Culture: An Anthropological Approach to Civilisation, University of Chicago Press.

Shah, Ghanshyam.(2004). Social Movements in India. New Delhi: Sage

Sydel Silverman. (2008). The Peasant Concept in Anthropology, Journal of Peasant Studies 7(1):49-69.

Vidyarthi, L. P. and, Binay Kumar Rai. (1977) The Tribal Culture of India, Concept, New Delhi.

Vidyarthi, L. P. (1978). Rise of Anthropology in India.Vol. 1, The Tribal Dimensions (edition 2019), Concept, New Delhi.

Vidyarthi, L. P. (1978). Rise of Anthropology in India.Vol. 2, The Rural, Urban and Other Dimensions (edition 2019) Concept, New Delhi.

Vinay Kumar Srivastava. (2008). Concept of 'Tribe' in the Draft National Tribal Policy, Economic & Political Weekly, December 13.

Vinay Kumar Srivastava. (2013). Tribes in india concepts institutions and practices, Serials Publications.